तित्थयर

वर्ष २२ अंक-१२ मार्च १९९९

जैन भवन

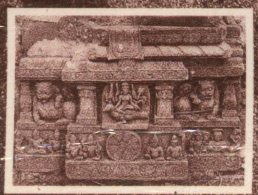

'जिसे तुम मारना चाहते हो वह तुम ही हो।'

Sethia Oil Industries Ltd.

Manufacturers of De-oiled Rice Bran, Mustard De-oiled Cakes, Neem deoiled Powder, Ground-nut De-oiled Cakes, Mahua deoiled cakes etc. And Solvent Extracted Rice Bran Oil, Neem Oil, Mustard Oil etc.

Plant
Post Box No. 5
Lucknow Road
Sitapur-261001 (U.P.)
Ph : 42017/42397/42073
(05862)
Gram - Sethia - Sitapur
Fax : 42790 (05862)

Registered Office
143, Cotton Street
Cal-700 007
Ph : 2384329/
8471/5738
Gram - Sethia Meal

Executive Office
2, India Exchange Place
Calcutta-700 001
Ph : 2201001/9146/5055
Telex : 217149 SOIN IN
Fax : 2200248 (033)

तित्थयर

श्रमण संस्कृति मूलक मासिक पत्रिका

जैन भवन
कलकत्ता

वर्ष - २२ अंक - १२, मार्च १९९९

संपादन
लता बोथरा

लेख, पुस्तक समीक्षा तथा पत्रिका से सम्बन्धित पत्र व्यवहार के लिये
पता - Editor, Tithayar, P-25 Kalakar Street
Calcutta - 700 007, Phone : 238 2655

तथा सदस्यता के लिये कृपया सम्पर्क करें -
Secretary, Jain Bhawan, P-25 Kalakar Street, Calcutta - 700 007
Subscription for one year : Rs. 55.00, US $ 20.00,
for three years : 160.00, US $ 60.00.
Life Membership : India : Rs. 1000.00, Foreign : US $ 160.00.

Published by Lata Bothra on behalf of Jain Bhawan from
P-25 Kalakar Street, Calcutta - 700 007 and Printed by her
at Surana Printing Works, 205 Rabindra Sarani
Calcutta - 700 007, Phone : 239-4393

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	लेख	लेखक	पृ. सं.
१.	महाराज श्रेणिक के परिवारिक	डा° विपिनचन्द कापडिया अनुवाद - भंवरलाल नाहटा	२८५
२.	राजा सम्प्रति	--	२९०
३.	श्रावक जीवन	आचार्यश्री विजयभद्र गुप्त सूरीश्वरजी	२९६
४.	पाठक दीर्घा	--	३००

आवरण चित्र-पाकबिरा से ७वीं से १०वीं शताब्दी की प्राप्त जैन मूर्तियाँ एवं मन्दिर ।

Composed by
COMPU LASER GRAPHICS, 9, Srimani Ghat Lane, Rishra-712248, Hooghly.

सम्मदिट्ठी सया अमूढे,
अत्थि हु नाणे तव-संजमे य ।
तवसा धुणइ पुराण पावगं,
मण-वय-कायसुसंवुड़े जे स भिक्खू ॥

जो सम्यग्दर्शी है, जो कर्त्तव्य-विमूढ़ नहीं है, जो ज्ञान, तप और संयम का दृढ़ श्रद्धालु है, जो मन, वचन और शरीर को पाप-पथ पर जाने से रोक रखता है, जो तप के द्वारा पूर्व-कृत पाप-कर्मों को नष्ट कर देता है, वही भिक्षु है ।

महाराजा श्रेणिक के परिवारिक

डा॰ विपिनचन्द कापड़िया
अनुवाद - भंवरलाल नाहटा

भगवान महावीर जब राजगृही में नहीं होते और जहाँ भी विचरते हों उस नगर की दिशामें सात आठ कदम चल कर तीन खमासमण पूर्वक भक्ति भाव से उल्लसित हृदय से प्रभु वन्दन कर स्वर्णजपों से स्वस्तिक कर स्तवनादि से अनुष्ठान करते । इस प्रकार श्रेणिक राजा ने जिन भक्ति के प्रभाव से जिननाम कर्म उपार्जित किया । जिसके प्रभाव से आगामी चौबीसी में पद्नाभ नामक प्रथम तीर्थंकर होगें । उन्हें हमारा भाव भक्तिपूर्वक कोटि-कोटि वन्दन ।

श्रेणिक राजा इस अत्युत्तम भावी तीर्थंकर पद पर पहुँचे, क्योंकि वे विरागी थे । अभयकुमार को राज्य सौंप कर निवृत्त होने की इच्छा की परन्तु उसने संसार त्याग की सम्मति मांगी और उसने अपने बुद्धि बल से युक्ति पूर्वक प्राप्त की क्योंकि संसार को जेल या दुःखागार समझने वाले को अंतराय न कर सका ।

श्री कृष्णजी स्वयं भी वैसे वैरागी थे । अपने पुत्र-पुत्रियों को बोध पूर्वक संसार त्याग कराते थे । थावच्चापुत्र की दीक्षा के अवसर पर उद्घोषणा कराई थी कि जिसे भी संसार त्याग करना हो, पीछे वालों के सार-संभाल निर्वाह की जिम्मेवारी स्वयं करेगें । स्वयं संसार त्याग को समर्थ न होने से अनुमोदना में सक्रिय रहे ।

"अभयकुमार जैसी बुद्धि हो" जो इस कीर्त्तिशाली अभयकुमार श्रेणिक राजा के ज्येष्ठ पुत्र थे । वे आर्द्रकुमार को प्रतिबोध देनेवाले थे । राजगृही नगरी व उपनगर नालंदा में भगवान के १४ चौमासे हुए थे । प्रतिदिन ७ हत्या करने वाला अर्जुनमाली, शालिभद्र, भगवान से धर्मलाभ प्राप्त करने वाली सुलसा, पुणिया श्रावक, ५२७ को प्रतिबोधपूर्वक संयममार्ग में प्रवृत्त करने वाले चरम केवली जंबूस्वामी, अनेक तपस्वीजन श्रेष्टी, संत, सतीयाँ, राजपुत्रादि परिवार की प्रेरक स्मृतियाँ राजगृह नगर के साथ जुड़ी हुई है ।

राजा श्रेणिक की राणी धारिणी के पुत्र मेघ कुमार ने भगवान के पास

दीक्षा ली उसका संथारा अंतिम स्थान में लगने से साधुओं के आवागमन की धूलि पड़ने से ठोकर लगने से अनिद्रित प्रातः काल प्रभु के पास घर लौट जाने को प्रस्तुत होकर आने पर पूर्व जन्म की कष्ट सहिष्णुता बतलाकर धर्म संयममार्ग में स्थिर किया। वे पूर्व जन्म में अनेक हाथियों के यूथपति 'सुमेरू प्रभ' नामक हाथी थे। वन मे लगे दावानल से बचने वाले प्राणियो मे एक शशक (खरगोश) के अपने पैर उँचा करने पर आ बैठने पर उसकी रक्षार्थ करूणाद्र हृदय से तीन अहोरात्र पैर उँचा रखा और अकड़ जाने से मृत्यु पाने वाले हाथी के जीव थे मेघकुमार।

मगधेश प्रसेनजित् के सभी पुत्रों में श्रेणिक विचक्षण और बुद्धिमान थे। दूसरे भाई उनसे ईर्ष्या रखते थे किन्तु पिता स्वयं हार्दिक प्रेम होते हुए भी अनेकशः वाह्य व्यवहार से स्वयं को उपेक्षित महसूस कर राजकुमार श्रेणिक अकेला ही राजगृह से देशाटन के हेतु निकल पड़ा और क्रमशः बेनातट जा पहुँचा और वहाँ के सेठ धनावह के यहाँ जाकर टिका। वहाँ सेठ की पुत्री नंदा से उसका विवाह हो गया। वहाँ उसके अभयकुमार नामक पुत्र हुआ जो बाल्यकाल से ही बड़ा बुद्धिशाली था। मगध के गुप्तचरो से ज्ञात कर राजा प्रसेनजित ने श्रेणिक को राजगृह बुलाकर राज्याभिषिक्त कर दिया। अभयकुमार जब बड़ा हुआ तो अपने पिता संबधी प्रश्न करने पर उसे सांकेतिक परिचयात्मक जो श्रेणिक लिख गया था बतलाया। बुद्धिमान अभयकुमार अपनी माँ नंदा को लेकर राजगृह जा पहुँचा और परीक्षा में उत्तीर्ण होकर मगध देश का प्रधान मंत्री बन गया। श्रेणिक का ज्येष्ठ पुत्र तो था ही किन्तु जन्म जात संस्कारो से ही धार्मिक जीवन बिताता हुआ राज्य सेवा रत था। वैराग्य वासित होने पर भी पितृ आज्ञा के बिना वह भगवान महावीर से दीक्षित होने मे असमर्थ था। जैन वाड्मय अभयकुमार के अद्भुत कार्य कलापो से सुपरिचित है।

एक वार श्रेणिक और चेलना शीतकाल में भगवान को वन्दन कर लौट रहे थे तो एक मुनि को भयंकर ठण्ड में कायोत्सर्ग स्थित निर्वस्त्र देखा रात्रि में जब चेलना महल में गरम वस्त्रों से वेष्टित सो रही थी और उसका हाथ बाहर रहने से शीत से अकड़ गया तो दिन में देखे हुए उस मुनि का स्मरण हो सहसा मुँह से निकल पड़ा इस भयंकर ठण्ड में उस की क्या दशा होगी ? श्रेणिक के कानों में पड़े उन शब्दोंने उसे रानी चेलना के शील के विषय मे सशंकित कर दिया। प्रातःकाल उठते ही भगवान को वन्दन करने जाते

अभयकुमार को आज्ञा दे गये कि चेलना के महल को जला देना। अभयकुमार ने महल को खाली करा के आग लगा दी। रानी चेलना को सुरक्षित महल मे स्थानान्तरित कर ही दिया।

श्रेणिक ने भगवान से चेलना के सतीत्व सम्बन्धी प्रश्न किया तो भगवान ने कहा-चेडा राजा की सातों पुत्रियाँ सती है। राजा श्रेणिक शीघ्रता से लौटा और महल को जलते देखकर कहा जा जारे अभयकुमार तुमने अनर्थ कर दिया। इन शब्दों से अभयकुमार ने अपने को दीक्षित होने की आज्ञा मांग ली और भगवान के पास जाकर दीक्षित हो गया।

अभयकुमार की पूर्व भव कथा

डा° नेमिचन्द शास्त्री ने मंगल मंत्र णमोकार एक अनुचिन्तन ग्रन्थ में लिखा है कि धर्मामृत की पहली कथा में वसुभूति ब्राह्मण लोभ से आकृष्ट होकर दिगम्बर मुनि व्रत धारण कर लिया और अष्टाह्निक पर्व सम्पन्न कराने के लिए केश लुंच और द्रव्य लिंगी साधु के अन्य व्रत धारण कर लिए। दक्षिणा प्राप्ति के लोभ से वह दया मित्र के साथ जंगल में जा रहा था तो एक दिन जंगली लुटेरों ने सेठ दया मित्र के साथ वाले व्यापारियों पर आक्रमण किया। दया मित्र द्वारा वाण वर्षा करने पर लुटेरों के वाण से वसुभूति घायल होकर तड़फड़ाने लगा। दया मित्र के उपदेश से उसे सम्यकत्व प्राप्ति हो चुकी थी। दया मित्र ने उसे समाधिमरण से आत्म कल्याण करने के लिए समझाया। वह मृत्यु भय त्याग कर णमोकार मंत्र के ध्यान मे एकाग्र हो गया। और बाह्य पदार्थो से परिणाम हटा कर ध्यानावस्था में ही शरीर त्याग कर सौधर्म देवलोक के मणिप्रभा विमान मे मणिकुण्ड नामक देव हो गया। अपना पूर्व भव ज्ञात कर उपकारी दया मित्र का दर्शन करने आया।

उस ब्राह्मण मणिकुण्ड का जीव स्वर्ग से च्यव कर महाराजा श्रेणिक का पुत्र महामंत्री अभयकुमार हुआ। वयस्क होकर दीक्षा ली और तपश्चरण कर समाधि पूर्वकदेह त्याग कर सर्वार्थ सिद्धि में अहमिन्द्र हुआ। वहाँ से च्यव कर निर्वाण प्राप्त करेगा। श्रमण के जुलाई-सितम्बर अंक के पृ-९७ में डा° विशिष्ट नारायण सिन्हा ने ग्रन्थों की समीक्षा में "सो परम महारस चारवे" की समीक्षा में घनानंद और आनंदघन को एक माना है किन्तु आनंदघन जी जैन अवधूत उच्चकाटि के थे और घनानंद का विषय अलग है वे जैनेत्तर थे।

श्री विपिनचंद्र ही· कापड़िया ने श्रेणिक के पारिवारिक जनों का परिचय दिया है पर उनके श्वसुर पक्ष के सदस्यों के उल्लेख बिना वह अधूरा रह जाता है और वह आज के परिवेश में जानकारी मिलना अत्यन्त महत्वपूर्ण है। भगवान महावीर के शासन की साध्वीसंघ प्रमुखा चन्दनवाला प्रभु के मौसी की पुत्री थी और उससे भी पहले केवलज्ञान प्राप्त करने वाली कौशाम्बी पति शतानीक की रानी सतीमृगावती थी और शील गुण सम्पन्न तो धारिणी, पद्मावती, प्रभावती, सुजेष्टा आदि सभी सती श्रेष्टाएँ थी।

यह उपर बताया जा चुका है कि श्रेणिक की महारानी नंदा अभयकुमार की माता थी। सेठ धनावह जो उसके पिता और अभयकुमार के नाना थे, उन्होंने वृद्धावस्था में भगवान महावीर से दीक्षा ली थी। चढ़ती भावधारा में जब आप क्षपकश्रेणि की ओर अग्रसर होने की तैयारी में थे दुर्भाग्यवश लघुशंका निवृत्यर्थ उठे और भावधारा भंग हो गई अतः गुप्ति से समिति स्थिति में आ गए जिससे भव भ्रमण करने पड़े। अन्त में परम कृपालु श्रीमद् राजचन्द्र के रूप में ज्ञानावतार इस काल में उत्पन्न हुए। इसी बीच अनेक भव करते हुए नेपाल के राजकुमार भी हुए थे। श्रीमद् जी ने स्वयं लिखा है कि लघुशंका के प्रमाद से इतने भव भ्रमण करने पड़े। श्रीमद् जी सभी ऋणानुवंधन चुका कर तेतीस वर्ष की अल्पायु में ही काल धर्म पाकर महाविदेह क्षेत्र मे उत्पन्न हुए। वर्तमान मे आप श्री सीमंधर स्वामी से दीक्षित होकर केवली अवस्था मे विचरण कर रहे है।

मातुश्री धनदेवी जी ने महाविदेह जाकर श्री सीमंधर स्वामी के समवशरण में जाकर जो अपने अनुभव पद में टंकशाली शब्दों में व्यक्त किये है देखिये –

समजु मुमक्षु तमे सुणो आ संदेशो।
मान्य करजो ना धरजो लगी रे अंदेशो॥
महाविदेहे हुतो गई हती आजे।
सीमंधर प्रभुजी ने सांमलवा कजे। तमे सुणो॥ १॥
केवली सभा मां त्यां श्री राजप्रभु दीठा।
ज्ञान हष्टिए तेओ लाग्या बहु मीठा। तमे॥ २॥
देशना अंते वंदी हेठी बैठी ज्या।
परम पिताए मने आपी शिक्षा त्यां। तमे॥ ३॥
वीर प्रभु ना हता शिष्य ए ज्यारे।

हती लाडली पुत्री एओ नी त्यारे । तमे ॥ ४ ॥
अध्यातम वृत्ति जोई आपी साबासी ।
रूप रेखा भावीनी सहज प्रकाशी । तमे ॥ ५ ॥
भरते आ काले लीधुं शरणं तमेजे ।
युग प्रधानसाचा सहजानंद ही ते । तमे ॥ ६ ॥
सर्वे मुमुक्षु संपी तेमे अनुसरजो ।
भावी तीर्थंकर सेवी भव जल तरजो । तमे ॥ ७ ॥
बेटी धनु तुंमारा आशीष कहजे ।
तेनी भक्तियां तुतो अलमस्त रहजे । तपेसु ॥ ८ ॥

हम्पी वाले सुप्रसिद्ध मातु श्री धन देवी जी उस भव में धनावह सेठ की लघु पुत्री और अभयकुमार की मौसी थी । भगवान के राजगृह पधारने पर नंदा ने दीक्षा ली ग्यारह अंगों का अध्ययन किया और २० वर्ष पर्यन्त निरतिचार संयम पालन कर मोक्ष को प्राप्त हुई । अंतगड दशासूत्र वर्ग ७ अं १ गा था १-२ में इसका वर्णन हैं । धनावह सेठ बड़े समृद्धिशाली थे । श्री ज्ञानविमल सूरिजी विरचित तीर्थमाला में सोही ग्राम में यहाँ यात्रा का वर्णन इस प्रकार किया है ।

अंकरतन आरस तणाए प्रतिमा प्रथम जिणंद अछे महिमा घणोए ॥२६॥
सेठ धनावह जाणियें ए वेणातट मांहिजेह थयो पहिलां सुण्योए ॥२७॥
नानो अभयकुमार नो ए तिणाभराव्या बिंब सवा कोड़ि मांझनिए ॥२८॥
ते मांहिलाए बिंबछै ए संप्रति प्रगटचा तेह भक्तिजन पुण्य थी ए ॥२९॥
वास भगति की घी घणी ए चन्द्रोदय करि आदि पूजा परिकर तणी ए॥३०॥
तास पासे लघु ग्राम छे ए भरडुआ नामे जेह विहां महिमा हती ए ॥३१॥
प्रगट करावी तेह भली ए कीधी तस बहु भक्ति यथा शक्ति करी ए ॥३२॥

प्राचीन तीर्थमाला संग्रह पृ-१३५

श्रीमद् राजचन्द्र जी की भक्तमण्डली में इतः पूर्व उनके स्वर्ग में होने की मान्यता थी । माता जी जब संघ सहित यात्रा करते हुए पधारे और घंटिया पहाड़ी पर गुरूदेव माता जी आदि भक्तों सहित थे तो रात्रि में ३ बजे माता जी को यह प्रेरणा हुई कि भक्तों की देवलोक मैं श्रीमद् के होने की मान्यता परिवर्तन कराओ तो उन्होंने तत्काल भक्ति करते हुए भोगी बाई आदि समस्त भक्तों की मान्यता सही कराई ।

राजा सम्प्रति

"माता ! तुम्हारा वचन मुझे मान्य है। तुम्हारी प्रसन्नता के लिए, जो भी आज्ञा होगी, उसका पालन मैं अवश्य करूँगा !" इन शब्दों को सुनकर माताको हार्दिक प्रसन्नता हुई और उसने सम्प्रतिको शुभाशीर्वाद दिया।

पहले जब सम्प्रति राजा ने दिग्विजय के लिए प्रस्थान किया, उसके पूर्व महाराज अशोक ने सुना था कि युवराज महेन्द्र बुद्धगुरू के उपदेश से अवन्ती छोड़कर बौद्धभिक्षु बन गया है। अतएव अशोक ने सम्प्रतिको उज्जयिनी प्रदान कर बहुत बड़ी सेना और परिवार सहित अवन्ती भेजा, किन्तु महत्वाकाँक्षी सम्प्रति ने पिता का सेना द्वारा अवन्ती न जाकर विजय-यात्रा के लिए अपने परिवार को अवन्ती में छोड़कर ही संसार के कोने-कोने में घूमकर अपनी दुहाई फिरा दी और राजाओं से सेना, शस्त्र और स्वर्ण प्राप्त करता हुआ वह जड़ और चैतन्य रूप अटूट सम्पत्तिका स्वामी बन गया।

वृद्धावस्था में पहुँचे हुए अशोक को इस नवोदित सूर्य की किरणों का प्रकाश समग्र जगत् में फैलता देखकर अत्यन्त प्रसन्नता होती थी। उसके मन में परम सन्तोष हो रहा था कि– "अहा ! मेरे पितामह चन्द्रगुप्त तो केवल भारत के ही सम्राट थे, किन्तु मेरा पौत्र तो सम्पूर्ण जगत् का सम्राट् बन गया है। संसार में ऐसा कोई देश नहीं है, जहाँ पर सम्प्रति की दुहाई न फिरती हो। अर्ध भारत के तीनों खण्ड में ऐसा कोई भी आर्य या अनार्य राजा नहीं था, जो सम्प्रति को 'कर' भेट में न देता हो !"

पौत्र जब दिग्विजय कर रहा था, तब उसकी विजय के प्रतिदिन ही नए-नए समाचार अशोक को सुनाई देते थे। तीनों खण्ड में सम्राट् सम्प्रति के दूत जहाँ तहाँ फैले हुए थे। प्रत्येक राज्य में सम्प्रति के गुप्तचर घूमते रहते थे। सोलह हजार राजाओं ने अपनी साम्राज्य भक्ति के परिचय-स्वरूप अपने राजकुमार सेवा में अर्पण कर दिए थे। वर्ष भर में एकबार तो उन्हे स्वयं भी सम्राट् की सेवा में उपस्थित होना पड़ता था। इस प्रकार पितामह ने तो सम्प्रति कुमार को अपनी सेना के साथ उज्जयिनी का ही अधिपति बनाकर भेजा था, किन्तु उस पराक्रम के उदीयमान सूर्य ने तो

सम्पूर्ण-पृथ्वी की सत्ता हस्तगत कर सोलह हजार राजाओं का स्वामित्व प्राप्त कर लिया था। इस प्रकार वह वासुदेव तो नहीं, किन्तु वासुदेव के समान ही संसार में प्रसिद्ध हो गया।

आर्य सुहस्ति स्वामी

वीर-सम्वत्की तीसरी शताब्दि के मध्यकाल में चौदह पूर्वधर श्री स्थूलिभद्र स्वामी के शिष्य आर्य महागिरि और आर्य सुहस्ति थे। ये दोनों युग-प्रधान उस समय जैन शासन के नायक थे। त्याग और वैराग्यकी उच्च भावना में आर्य महागिरि की तो पराकाष्टा ही थी। इससे जिनकल्प का उस समय यद्यपि विच्छेद हो गया था, तो भी जिनकल्पी की तुलना करने विषयक उनका मनोरथ हुआ। अतएव उन्होंने समस्त गच्छ का भार आर्य सुहस्ति स्वामी को सौंपकर स्वयं गच्छ में रहते हुए जिनकल्पी की तुलना करते हुए एकाकी होकर वे तपश्चर्य करते पृथ्वीपर विहार करने लगे।

आर्य सुहस्ति स्वामी अपने शिष्य-समुदाय के साथ विहार करते पाटलीपुत्र आए। वहाँ वसुभूति नाम के श्रेष्ठीको प्रतिबोध देकर जैन बनाया। इसके पश्चात् देश-विदेश में विहार करते हुए और भव्य जीवों को अपने ज्ञानामृत का पान कराते हुए आर्य सुहस्ति स्वामी महावीर स्वामी को वन्दन करने के लिए अवन्ती देश की ओर विहार कर गए।

एकदिन अवन्ती में जीवन्त स्वामी का बहुत बड़ा महोत्सव हुआ। उस समय रथयात्रा का बड़ा भारी जुलूस निकला। संसार-रूपी समुद्र को पार करने के लिए जहाज के समान वह जीवन्त स्वामी का रथ नगर में भ्रमण करने के लिए निकाला गया। हजारों जैन धनपति उस समारोह में सम्मिलित रहने के कारण अवन्ती की समृद्धि का उस समय प्रत्यक्ष दर्शन हो रहा था। अनेक प्रकार के वाद्य-यन्त्र बज रहे थे। घुड़सवार सेवकों का कोई पार ही नहीं था। इस प्रकार अगणित जैन उसमें साथ चलते हुए अपनी समृद्धि बतला रहे थे। रथ के पीछे भी अनेक साधु समुदाय के साथ आर्य महागिरि और आर्य सुहस्ति स्वामी भी सबके आगे चल रहे थे। उनके पीछे श्रावक समुदाय एवं साध्वी तथा श्राविकाओं का समुदाय भी व्यवस्थित रूप से चल रहा था। इस प्रकार वह जुलूस नगर में भ्रमण कर रहा था।

वह जुलूस जब राज-प्रासाद के निकट पहुँचा, तो वहाँ के अनेक दास-दासी आदि कोई झरोखे में से तो कोई छज्जे या खिड़की में से और कोई

चाँदनी या जहाँ से जिसे अनुकूलता हुई वहीं से उस जुलूस को देखने लगा। उस समारोह की धूमधाम से आकृष्ट हो, महान् सम्प्रति भी गवाक्ष में बैठे हुए उसका दृश्य देखने लगे । उनकी दृष्टि चारों ओर घूमती हुई अनेक मनुष्यों को देख रही थी । उन्होंने जीवन्त स्वामी के रथ को भी देखा और वाद्य-यन्त्रों के मधुर-स्वर भी सुने । धीरे-धीरे उनकी दृष्टि आर्य सुहस्ति स्वामी पर पड़ी । उन सूरीश्वर को देखकर राजा के मन में विचार हुआ कि, इन शान्तात्मा, पवित्र मुनि को पहले कहीं देखा है ! किन्तु कहाँ देखा था, यह याद नहीं आ रहा है । इन्हें देखकर मेरे मन में स्नेहभाव जागृत हो रहा है । विवेकी पुरूष कहते हैं कि जिसे देखने से प्रसन्नता होती हो, उसे पूर्वजन्म का बन्धु समझना चाहिए । इस प्रकार विचार करते हुए महान् सम्प्रति स्मरण करने लगे कि इन्हें कहाँ देखा है ? फिर भी याद नहीं आया, किन्तु इस बात का तो उनके मन में निश्चय हो ही गया कि इन्हें कहीं देखा अवश्य है । इस प्रकार बारम्बार स्मरण करते हुए सम्प्रति एकदम अचेत से हो गए। उन्हें मूर्छा आगई । राजमहल में कोलाहल मचगया । मन्त्री लोग दौड़ कर वहाँ आ पहुँचे, और उनको मूर्छा से जागृत करने के लिए अनेक प्रकार के उपाय करने लगे । वायु प्रक्षेप (पङ्खा झलने) आदि के रूप में शीतोपचार करने पर जैसे ही वे सचेत हुए, तब जाति-स्मरण ज्ञान होने से उन्होंने देखा कि- "अहो ! पूर्वजन्म में मैं कौन था ? और क्या कार्य करने से राज्य का स्वामी बन सका हूँ ?"

तत्काल ही वे गवाक्ष से नीचे आए और राजमहल से चलकर उस समारोह के समीप जा पहुँचे । सब लोगोंने उन्हें आते देख कर मार्ग दिया। उन्होंने सुहस्ति स्वामी की तीनबार प्रदक्षिणा करके विनम्र भाव से नमन किया और दोनों हाथ जोड़कर हर्ष पूर्वक प्रश्न किया :- "भगवन् ! आप मुझे पहचानते हैं ?"

"आप राजा हैं । यह सभी लोग जानते हैं कि आप सम्राट् अशोक के पौत्र और वीर कुणाल के पुत्र हैं ।"

"मैं राजा के रूप में आपसे नहीं पूछ रहा हूँ । आप अन्य किसी प्रकार से भी मुझे पहचानते हैं ?"

महान सम्प्रति के इस वचन को सुनते ही सुहस्ति स्वामी ने ज्ञान का उपयोग किया और उसके द्वारा सम्प्रतिका पूर्व वृत्तान्त जानने के बाद

कहा :- "राजन् ! मैंने तुम्हें अच्छी तरह पहचान लिया है ! पहले जब हम विहार करते हुए कौशाम्बी नगरी में आए थे, उस समय भयङ्कर दुश्काल था और उसी समय एक गरीब भिक्षुक ने हमारे पास आकर लड्डू (मोदक) की आशा से दीक्षा ली थी । दीक्षा लेने के पश्चात एक दिनका चारित्र पालन कर वह भिखारी उस जन्म में आयुष्य पूर्ण होने से देह त्याग कर जगत से विदा हो गया । वही आत्मा तुम्हारे रूप में आज महान् सम्प्रति बनकर यहाँ अवतीर्ण हुई है ।" आर्य सुहस्ति स्वामी ने संक्षेप में उस गरीब भिखारी का चरित्र वहाँ सब के सन्मुख कह सुनाया !

राजा ने उनसे फिर पूछा :- "हे भगवन् ! जैन धर्म, अरिहन्त भगवन्त का धर्म प्राप्त होने का फल क्या है ?"

"उसका सर्वोत्तम फल तो मोक्ष प्राप्ति है, किन्तु सामान्य फल स्वर्ग, राज्य-प्राप्ति आदि अनेक प्रकार का जानना चाहिए ।"

"हे पूज्य ! अव्यक्त सामायिक चारित्र का फल भी बतलाइए !" राजाने पुनः पूछा ।

"हे राजन् ! सामायिक करनेवाला प्राणी यदि पुण्य उपार्जन करे तो उसके पुण्य की संख्या नहीं हो सकती । श्रावक भी सामायिक करने से उतने समय तक साधु ही माना जाता है । 'समणो इव सावओ हवइ जम्हा' अतएव बारम्बार सामायिक करना चाहिए । फिर अव्यक्त सामायिक का फल भी राज्य प्राप्ति है ।"

वैसे यदि कोई पुरूष प्रतिदिन एक लाख सुवर्णमुद्रा का दान करे और दूसरा पुरूष यदि नित्य विधिपूर्वक शुद्ध मन से एक सामायिक करे तो भी उक्त दान करनेवाला, सामायिक करनेवाले की बराबरी नहीं कर सकता । प्रतिदिन दो घड़ी विधिपूर्वक शुद्ध सामायिक करनेवाला श्रावक यदि पुण्य बाँधे तो बानवे करोड़, उनसाठ लाख, पच्चीस हजार, नौ शौ पच्चीस पल्योपम से भी कुछ अधिक देवगति का आयुष्य प्राप्त करता है । जो लोग मोक्ष गए, जा रहे हैं और जावेंगे, वे सब सामायिक के ही प्रभाव से जानना चाहिए।"

"हे भगवन् ! आपके ही प्रभाव से मुझे राज्य प्राप्त हुआ है । यदि उस समय मुझे आपका दर्शन नहीं होता, तो संयम-लक्ष्मी की प्राप्ति कैसे होती ? मेरा वह रंक-भिखारी जीव ऐसी अपूर्व लक्ष्मी का भोक्ता कहाँ से और कैसे होता ? अतः हे प्रभो ! पूर्व भव में भी आप ही मेरे गुरू थे, और इस भव

में भी आप ही मेरे गुरू बनने की कृपा कीजिए।" सम्प्रति ने निवेदन किया।

"हे नरेन्द्र ! हमें देखते ही तुम्हें जाति-स्मरण ज्ञान उत्पन्न हुआ और उसी के प्रभाव से तुमने अपना पूर्वजन्म देख लिया। जैन धर्म का प्रत्यक्ष प्रभाव भी तुम्हें दृष्टिगोचर हो गया। मैंने जो तुमसे कहा है कि जैन धर्म का परोक्ष फल तो मुक्ति प्राप्ति ही है। ये सब तो उसके अवान्तर फल हैं। इसलिए धर्म में आलस्य नहीं करना चाहिए।" गुरू ने समझाया।

"आपके उपकारों की सीमा ही नहीं है और यह राज्य भी आपकी कृपा का ही फल है। अतएव अब इसे आप ही ग्रहण कीजिए, जिससे कि मैं कृतार्थ हो सकूँ ! आपके ऋण से मुक्त हो सकूँ।" राजा ने आभार प्रदर्शित किया।

"राजन ! निस्वार्थी मनुष्यों को किसी प्रकार की लालसा नहीं होती। संसार से मुक्त हुए त्यागी तो केवल मुक्ति ही चाहते हैं। तब तुम्हारे राज्य से हमें क्या प्रयोजन हो सकता है ?"

"तो भगवन् ! बतलाइए कि मैं क्या करूँ ? मेरे लिए क्या करना उचित है ?"

"नरेश्वर ! स्वर्ग और मोक्ष देनेवाले जैन धर्म की आराधना कीजिए, जिससे कि इस संसार से तुम्हारा निस्तार हो सके ! धर्म, अर्थ का और मोक्षरूपी चारों पुरूषार्थ की साधना के बिना मनुष्य-जीवन पशु के समान निष्फल है। इन चारों वर्ग में धर्म पुरूषार्थ को श्रेष्ट कहा है, क्योंकि शेष तीनों पुरूषार्थों की सिद्धि धर्म के बिना नहीं हो सकता। जो प्राणी ऐसे उत्तम जैन धर्म को छोड़ कर सामान्य सुख के लिए भोगोपभोग में ही स्वर्ग मान कर उसकी आशा में दोड़ते रहते हैं। वे लोग कल्प वृक्ष का उन्मूलनकर धतूरे को बोना चाहते हैं। चिन्तामणि रत्न का त्यागकर काँच के टुकड़े को स्वीकार करते हैं। ऐरावत हाथी को त्यागकर गधे को मोल लेते हैं। अतः हे राजन् ! सर्वोत्तम जैन धर्म का ही तुम्हें पालन करना चाहिए। इस धर्म का साक्षात् फल तुमने प्रत्यक्ष देख भी लिया है, जिससे अब तुम्हें अन्य प्रमाणों की आवश्यकता नहीं रहगई है ?" गुरु ने उपदेश दिया।

राजाने धर्म-श्रवण करने की जिज्ञासा प्रकट की। इसपर गुरू ने कहा- "राजन् ! इस समय तो हम प्रभु के महोत्सव में हैं। इन जीवन्त स्वामी-

महावीर स्वामी का आज बड़ा महोत्सव होने से उसमें हम लगे हुए हैं। धर्म का स्वरूप आदि जब तुम हमारे उपाश्रय में आओगे तब विस्तार से समझावेंगे !"

इस प्रकार महान् सम्प्रति ने आकर गुरू को जब नमस्कार किया, तो उस समारोह में चलनेवाले हजारों मनुष्यों को अत्यन्त आश्चर्य हुआ कि राजा यह क्या कर रहा है ? क्या पूछ रहा है ? और इस रहस्य को जानने के लिए सब लोग आतुर हो उठे। गुरू के उपदेश से सम्प्रति को बोध प्राप्त हुआ और जैन धर्म के प्रति उसके मन में पूज्य भाव उत्पन्न हो गया। अपने गुरू को नमन करने एवं उनका उपदेश सुनने से राजा की माता को बड़ी ही प्रसन्नता हुई और विशेष प्रसन्नता तो यह थी कि उसका पुत्र तीनों खण्ड का भोक्ता होते हुए भी अब संसार में निमग्न नहीं हो रहा है !" इस प्रकार सब के आश्चर्य बीच वह चलसमारोह-जुलूस वहाँ से आगे बढ़कर अपने स्थानपर चला गया।

क्रमशः

श्रावक जीवन

आचार्य श्री विजयभद्र गुप्त सूरीश्वरजी

– घर में बहु कितना ही अच्छा काम करती हो, सास उसका मूल्यांकन नहीं करती है, प्रशंसा के दो शब्द नहीं बोलती है...ऐसा ज्यादातर घरों में देखने में आता है न ?

– पुरुष बहुत मेहनत कर पैसा कमाता है, कुछ पत्नियाँ उसका मूल्यांकन नहीं करती हैं । ऊपर से बोलती हैं : 'पैसे कमाकर लाते हो...क्या हमारे पर उपकार करते हो ? घर चलाना है तो पैसे कमाने ही पड़ते हैं ।'

– नौकर सेठ के प्रति कितना भी सद्भाव रखता हो, अच्छा काम करता हो, परंतु ज्यादातर सेठ लोग नौकरों का मूल्यांकन नहीं करते हैं ! वैसे सेठ नौकरों के प्रति कितना भी सद्भाव और सद्व्यवहार रखते हों, नौकर लोग प्रायः उनका मूल्यांकन कम करते हैं ।

सद्भाव और सद्व्यवहार का मूल्यांकन करें :

दुनिया में सद्भाव और सद्व्यवहार बहुत दुर्लभ तत्त्व हैं । किसी भी व्यक्ति में ये दो तत्त्व दिखायी दें तो उसकी प्रशंसा करनी चाहिए । उसके प्रति सद्भाव प्रदर्शित करना चाहिए, सद्व्यवहार करना चाहिए । ऐसा करने से उन दो तत्त्वों में वृद्धि होती है । सद्भाव वृद्धि पाता है, सद्व्यवहार व्यापक बनता है ।

मुनिराज ने 'नयसार' के सद्भाव का और सद्व्यवहार का मूल्यांकन किया । 'यह आत्मा सुयोग्य है, सुपात्र है, गुणवान् है । इसने मुझे मार्ग बताया है, मैं भी उसको मार्ग बताऊं ।'

जब सही रास्ते पर दोनों आए तब नयसार ने कहा : 'हे महात्मन्, इसी रास्ते पर आप चले जाना...आगे सार्थ मिल जाएगा ।'

मुनिराज ने नयसार के सामने करूणा और वात्सल्य से देखा । नयसार नतमस्क हो, मुनिराज को नमन कर रहा । मुनिराज ने प्रेमपूर्ण शब्दों में कहा : 'महानुभाव, तुने मुझे एक गांव का रास्ता दिखाया, मैं तुझे परम सुख और परम शान्ति का रास्ता बताना चाहता हूं ।'

'बताइए महात्मन् !' नयसार ने भक्तिपूर्ण शब्दों में कहा ।

मुनिराज ने कहा : 'नयसार, जो सर्वज्ञ और वीतराग अरिहंत हैं उनको ही परमात्मा मानना । जो महाव्रतधारी हों, जिनाज्ञानुसारी हो, उनको सद्गुरु मानना और सर्वज्ञभाषित धर्म को ही धर्म मानना । और, मैं तुझे एक महामंत्र देता हूं, रोजाना उसका जाप करना ।'

मुनिराज ने नयसार को श्री नवकार महामंत्र दिया । नयसार ने बहुत ही भक्तिभाव से महामंत्र ग्रहण किया । कृतज्ञभाव से नयसार की आंखें भर आयी । मुनिराज ने आशीर्वाद दिया और अपने रास्ते चल दिए । नयसार, जब तक मुनिराज दिखायी दिए, तक तक खड़ा रहा, बाद में वह अपने कैम्प की ओर वापस लौटा । उसका हृदय भक्तिभाव से गद्गद् था । उसकी कल्पना में वे मुनिराज तैरते थे । उसने "सम्यग्दर्शन" गुण पा लिया था ।

'अतिथि संविभाग' का यह प्रभाव था । 'अतिथि' के रूप में आप के घर कभी उत्तम आत्मायें आ सकती हैं । कोई तीर्थंकर की, कोई गणधर की, कोई केवलज्ञानी की आत्मा, जो कि आनेवाले जन्मों में होनेवालीं हों, आ सकती हैं आप के घर । यदि आप भावपूर्ण हृदय से उनका संविभाग करते हैं तो महान् लाभ प्राप्त हो सकता है ।

हृदय में 'अतिथि' के प्रति प्रेमभाव, भक्तिभाव, अहोभाव होगा तो अतिचार नहीं लगेंगे । परंतु उस भाव में गिरावट आती है तो अतिचार लगते ही हैं ।

पांच अतिचार :

'अतिथि - संविभाग' व्रत के पांच अतिचार ग्रन्थकार ने इस प्रकार बताये हैं :

सचित्तनिक्षेप-पिधान-परव्यपदेश-मात्सर्य-कालातिक्रमाः ।

१. पहला अतिचार लगता है सचित्त निक्षेप । साधु-साध्वी सचित्त (सजीव) आहार नहीं लेते हैं, सचित्त आहार उनके लिए वर्जित होता है । वैसे, सचित्त (फल-सब्जी वगैरह) वस्तु से संलग्न अचित्त आहार भी साधु-साध्वी ग्रहण नहीं करते हैं । कच्चे पानी के बरतन पर रोटी-सब्जी वगैरह पड़े हों, हम वह आहार नहीं ले सकते ! चूंकि कच्चा पानी (बिना उबाला हुआ) सचित्त होता है । वैसे एक बर्तन में फल पड़े हैं, फल सचित्त होते हैं

(केले के अलावा) उन फलों के बर्तन पर अचित्त आहार पड़ा हो, फिर भी वह आहार हम ग्रहण नहीं कर सकते हैं ।

अतिथि-संविभाग–व्रत करनेवाला श्रावक, यदि अज्ञानता से आहार को सचित्त वस्तु के ऊपर रखता है...गल्ती से रखता है...साधु मुनिराज को वह कल्पता नहीं है, इसलिए वे लेते नहीं । यह 'अतिचार' है । जान बूझकर, साधु को आहार नहीं देना पड़े-इस भावना से करता है तो व्रत भंग होता है ।

जैसे कि वह सोचता है : 'मेरे इस अतिथि-संविभाग व्रत के अनुसार मुझे साधु को भिक्षा देनी चाहिए, परंतु ये साधु सचित वस्तु पर रखी हुई वस्तु लेते नहीं है, मैं उनके सामने आहार रख दूंगा...वे लेंगे नहीं और मेरा व्रत टूटेगा नहीं !'

इस में 'मेरा व्रत टूटेगा नहीं', यह भाव व्रतसापेक्षता का होने से अतिचार है, अन्यथा जान बूझकर भिक्षा नहीं देने की भावना से यदि वैसा करता है तो व्रतभंग ही कहा जायेगा ।

२. दूसरा अतिचार है 'सचित्तपिधान' का । आहार के ऊपर सचित्त पुष्प-फल-कंद आदि रख कर आहार को ढक देता है और जब भिक्षा के लिए मुनि आते हैं तब वह आहार उनके सामने रख देता है । मुनिराज वह आहार ग्रहण नहीं करते हैं, चले जाते हैं, तब यह मूर्ख मनुष्य सोचता है : मैंने तो मुनि के सामने भिक्षा धर दी थी, उन्होंने नहीं ली तो मैं क्या करूँ ? मेरा व्रत टूटा नहीं !

मात्र मन मनाने की बात है यह ! वास्तव में व्रतभंग ही कहा जायेगा यह । कुटिल बुद्धि से ही उसने अचित आहार को सचित वस्तुओं से ढंक कर रखा है...जिससे कि मुनि आहार ग्रहण करे ही नहीं ! अतिथि को नहीं देने की भावना में 'संविभाग' रहता ही नहीं ! संविभाग करने को भावना के बिना अतिथि संविभाग व्रत कैसे अखंड रहेगा ! टूट ही जायेगा ।

३. अब तीसरा अतिचार समझ लो । लगाने के लिए नहीं, बचने के लिए समझना ! श्रावक साधुओं की भिक्षाग्रहण करने की पद्धति जानता है कि जो वस्तु जिस व्यक्ति की हो, उसी की इच्छा से वह वस्तु ग्रहण करते हैं। मालिक की इच्छा के बिना, दूसरा व्यक्ति वह वस्तु देवे, तो भी साधु ग्रहण नहीं करते ! इस नियम का फायदा उठानेवाला व्रतधारी श्रावक, साधु को

भिक्षा नहीं देनी पड़े इसलिए भिक्षा देते समय बोलता रहता है : 'यह घी तो लल्लुभाई का है, यह शर्करा चंचलबेन की है...और वे लोग यहां नहीं हैं, फिर भी महाराज सा. आप ग्रहण करें यह घी और यह शर्करा!' मुनन मना करेंगे ! नहीं लेंगे भिक्षा और चले जायेंगे ! वह व्रतधारी श्रावक खुश हो जायेगा ! चलो, घी-शर्करा बच गये ! और व्रत भी बच गया !

कैसे बचेगा व्रत ऐसी दुष्ट बुद्धि वाले का ! टीकाकार आचार्यश्रीं ने लिखा है-- **'यदाऽना भोगादिनाऽतिक्रमादिना वा एताना चरति तदाऽविचारोऽन्यदा तु भंग एव !'** यदि व्रतधारी अनजानपन से...भूल से वैसा करता है तो अतिचार लगता है, परंतु अनाचार करता है, इरादातन करता है...तो व्रतभंग ही होता है।

४. चौथा अतिचार तब लगता है जब वह भिक्षा देते समय सोचता है: 'मेरे पासवाले भिखारी ने भी मुनि को भिक्षा दी, तो क्या मैं उस भिखारी से भी गया बीता हूं ?' ऐसा सोचकर देता है भिक्ष । अथवा क्रोध कर के देता है भिक्षा...तो अतिचार लगता है । 'मात्सय' का अर्थ है दूसरों का गुण सहन नहीं होना । दूसरे लोग मुनि को दान देते हैं, यह दूसरों का गुण देखकर सहन नहीं होता है...और मात्सर्य से प्रेरित होकर भिक्षा देता है . यह अतिचार है । वास्तव में 'संविभाग' होता ही नहीं है, इसलिए भंग ही मानना चाहिए ।

५. पांचवा अतिचार भी नाम का ही अतिचार है, वास्तव में व्रत भंग ही होता है । मुनि का भिक्षा का जो समय हो, उसके पहले ही भोजन कर ले, अथवा समय बीत जाने के बाद भोजन करे । जब मुनि आये भिक्षा के लिए, तब कहे 'आप देरी से आयें' अथवा 'आप जल्दी आ गये ।'

ये पांच अतिचार हैं । संविभाग की भावना चली जाती है तव ये अतिचार लगते हैं । अतिथि के प्रति भक्तिभाव नष्ट हो जाता है तब ये दोष लगते हैं । दोषरहित व्रतपालन ही आत्मकल्याण का कारण बनता है– यह बात कल बताऊंगा ।

क्या सचमुच इस्लाम जानवरों को जिबह करने की इजाजत देता है ?

एस.एम. सलमान अर्शद एडवोकेट

आज का मानव-समाज जिस रूप में हमारे सामने है, क्या वह आम आदमी के कारण है, या कि उन तमाम महापुरूषों के कारण जिन्होंने समय-समय पर अपनी तालीम से हमें नवाजा । यकीनन दूसरी बात सही है, क्योंकि आम आदमी तो हमेशा अपनी इच्छाओं के पीछे भागता रहता है, कई बार तो ऐसा भी होता है कि वह विचार ही नहीं करता कि उसकी इच्छाएँ उसे कहाँ ले जा रही हैं । हमारे मुस्लिम समाज में मांसाहार का प्रचलन भी ऐसी ही इच्छाओं का परिणाम है । जिससे न सिर्फ हम अपना स्वास्थ्य खराब कर रहे हैं बल्कि कुदरती निजाम को भी बिगाड़ रहे है । जिसके लिए हम कुदरती कानून के मुताबिक सजाएँ जरूर पायेंगे/पा रहे हैं। कहा जाता है कि इस्लाम मांसाहार की इजाजत देता है ? क्या सचमुच ? **क्या पैगम्बर हजरत मोहम्मद स. दुनियां के दूसरे महापुरूषों से अलग हटकर कुदरती निजाम को बिगाड़ने की इजाजत दे सकते हैं ?** ऐसा लगता तो नहीं, फिर भी इस पर विचार करें..... ।

जन्म के समय सभी इन्सान एक जैसा होते हैं । कोई नहीं जानता, आगे वे क्या बनेंगे, लेकिन बाद में इन्हीं में से कुछ लोग अपनी जिजीविषा, साधना, तपस्या और इबादत के बल पर महापुरूषों की श्रेणी में आ जाते हैं और अपनी तालीम की रोशनी से दुनियां को मालामाल करते हैं ।

यदि हम तटस्थ भाव से, बिना किसी पूर्वाग्रह के दुनियां के तमाम महापुरूषों पर दृष्टिपात करें तो पायेंगे कि सर्वप्रथम उन्होंने प्राणी मात्र के कल्याण के लिये तपस्या की और जब उन्हें ज्ञान (वही) प्राप्त हो गया तो उन्होंने अपने ज्ञान के आलोक से दुनियां को आलोकित किया । यहां गौरतलब बात यह है कि सभी महापुरूषों ने अपने ज्ञान को देश, काल, वातावरण के अनुसार एक निश्चित स्वरूप दिया, जिसे समग्रता में हम धर्म या मजहब कहते हैं । यही कारण है कि विभिन्न धर्मों की अन्तर्वस्तु तो एक है लेकिन उनका बाह्य स्वरूप अलग-अलग दिखाई पड़ता है ।

हम अपने मूल विषय "**इस्लाम में मांसाहार की इजाजत है या नही**" पर लौटते हैं। इस्लामिक मेडिकल एसोसिऐशन के प्रतिनिधि डॉ. एम.ए। कातमें ने मांसाहार को कुरान के कानून का स्पष्ट उल्लंघन बताया है। बादशाह अकबर ने अपने द्वारा चलाये गये मत 'दीन-ए-इलाही' में मांसाहार व जीव हत्या करने को स्पष्ट रूप से मना किया है। इतिहास का सामान्य विद्यार्थी भी जानता है कि बादशाह अकबर बहुत बड़े विद्वान् थे और उनके दरबार में विभिन्न धर्मावलम्बियों के बीच बहस-मुबाहिसे हमेशा होते रहते थे इसलिये उनके फैसले को निराधार नहीं कहा जा सकता है।

हिन्दुस्तान में जिनके प्रभाव से इस्लाम प्यार, मोहब्बत और अमन का माध्यम बनकर फैला, वे हमारे सूफी फकीर हैं और यह सभी जानते हैं कि सूफी फकीर मांसाहार नहीं करते थे। ऐसा क्यों था? क्या इसका कोई वैज्ञानिक, धार्मिक व तार्किक आधार भी है, इस पर विचार किया जाना चाहिये। हमारे रसूल स. की '**हदीश**' **है कि "इरहमु मन फिल अर्दे यरहम कुमर्रहमान**" अर्थात् दुनियां वालों पर तुम रहम करो, क्योंकि खुदा ने तुम पर बड़ी मेहरबानी की है। सोचने की बात है कि आज जिन जानवरों को हम जिबह करते हैं वे न सिर्फ इसी दुनियां के हैं बल्कि हमारे जीवन के अटूट हिस्से हैं। इसी तहर '**वेजा तवल्ला सा आ फिल अरदे लयफ सेदा फीहा व युह लिकल हरसा वन्नस्ल वल्लाहो ला युहिबुल फसाद।**' अर्थात् जानवरों को मारना व खेती को खराब करना जमीन में खराबी फैलाना है और अल्लाह खराबी को पसन्द नहीं करता। आज अगर पर्यावरण की समस्या के मद्देनजर इस आयत-ए-करीमा को देखा जाय तो यह कितना मौजू है.....।

अभी ऊपर यह बात कही गई है कि महापुरूषों ने अपने ज्ञान को देश, काल, वातावरण के अनुसार एक निश्चित स्वरूप देते हुए नियमबद्ध किया है। उदाहरण के तौर पर मात्र एक बधने पानी से विधि-पूर्वक एक मुस्लिम मुँह-हाथ व पैर भली प्रकार धो लेता है। यदि निश्चित नियम का पालन न किया जाय तो एक बाल्टी पानी से भी इतना ही काम न होगा। प्रश्न उठता है कि यह नियम क्यों बना? यदि देश, काल, वातावरण के हिसाब से देखा जाय तो इस्लाम सर्वप्रथम अरब जगत में फैला, जहाँ पानी की कमी थी। इसलिये ऐसा नियम वहाँ के लिये नितान्त आवश्यक था।

हम जानते हैं कि अरब जगत में अनाज आदि की पैदावार आज तमाम वैज्ञानिक तकनीकों के उपलब्ध हो जाने के बाद भी बहुत कम है तो

पुराने जमाने में और भी बुरा हाल रहा होगा। ऐसे में आदमी ने अपनी जरूरत पूरी करने के लिए गोश्त (मांस) खाना शुरू किया होगा। जो कि अन्य दूसरी चीजों की तरह ही एक परम्परा की भाँति आज तक चला आ रहा है। हमारे देश में भी जनजातियाँ जंगली घास, कुछ विशेष प्रकार की जड़, फल और जानवरों का मांस इसी कारण खाते हैं। इस बात को ध्यान में रखकर देखें तो आज इस प्रकार की मजबूरी नहीं है। अरब जगत भी तेल जैसी दौलत पा लेने के कारण अब अपनी अनाज की जरूरतों को आसानी से पूरा करने लगा है। अतः मांसाहार अब हमारी विवशता कतई नहीं।

"ईद-उल-जुहा" एक ऐसा त्यौहार है जिसमें कुर्बानी करना अनिवार्य सा बताया जाता है, क्या सचमुच में ऐसा ही है? **जिस कुरान के जरिये खुदा हमें मोहब्बत, प्यार, दया, करूणा और ममत्व का संदेश देता है और हर प्राणी से रहम व प्यार से पेश आने की ताकीद करता है, क्या उसी कुरान के जरिये खुदा हमें किसी जानदार के कत्ल की इजाजत भी दे सकता है।** अबूहरैरा रजि. से रिवायत है कि एक बार रसूल स. ने एक वेश्या का वाकया बयान किया कि एक कुत्ता प्यास से तड़फ रहा था और कुँए के चारों ओर जीभ निकाले टहल रहा था। वेश्या ने अपना मोजा निकाल कर पानी में भिगोया और उसके पानी से कुत्ते की प्यास बुझाई। अल्लाह ने उसके सभी गुनाहों को इस खिदमत के एवज में माफ कर दिया। अगर खुदा इस तरह की खिदमत का इतना बड़ा ईनाम दे सकता है तो क्या किसी जानदार के कत्ल की सजा नहीं देगा।

कुर्बानी हजरत इब्राहिम अलैहिस्सलाम की सुन्नत के तौर पर की जाती है, वाकया है कि अल्लाह ने हजरत से उनकी सबसे प्यारी चीज की कुर्बानी मांगी (यह एक तरह से हजरत का इम्तेहान था) हजरत ने अपने बेटे हजरत इस्माईल अलैहिस्सलाम की कुर्बानी देने की कोशिश की। लेकिन अल्लाह को कुर्बानी नहीं चाहिये थी वह तो अपने प्यारे बन्दे का सिर्फ इम्तेहान ले रहा था। अतः खंजर बजाय हजरत इस्माईल अलैहिस्सलाम के भेड़ की गर्दन पर लगी जो कि फरिश्ते के जरिये अल्लाह ने हजरत के सामने रखवा दिया था। यही वह वाकया है कि जिसके आधार पर लाखों करोड़ों जानवरों की कुर्बानी की जाती है। सोचने का विषय है कि जानवरों को इस आधार पर कत्ल करके हम कौनसा इम्तेहान दे रहे हैं। जहाँ हम वाकये से हम जानदार का कत्ल करके कहीं अपने आखिरत को बिगाड़ तो

नहीं रहे हैं ? वैसे भी इस्लाम किसी भी शक्ल में खून के इस्तेमाल के खिलाफ है, यह एक सच्चाई है कि गोश्त से खून को पूरी तरह अलग किया ही नहीं जा सकता, इससे भी स्पष्ट होता है कि अल्लाह नहीं चाहता कि हम जानवरों को कत्ल करें। इसलिए अल्लाह स्पष्ट रूप से फरमाता है कि "लइयना लल्लाह लुह मुहा वला दिमा ओहा, वला की अयना लुहत तकवा" यानी अल्लाह को हमारी कुर्बानियों के गोश्त और खून की नहीं बल्कि खुदा के लिए हमारी मोहब्बत और इश्क की जरूरत है।..... और ईद-उल-जुहा के मौके पर हमें इसी का सबूत पेश करना चाहिए। यानी हम कुर्बानी तो करें लेकिन जानवर की नहीं बल्कि अपनी दुनियावी मोहब्बत (माया-मोह) की।

मैं अपने तमाम मुस्लिम उल्लेमाओं, दानिशवरों और जानकारों से गजारिश करता हूँ कि वे आगे आयें और हदीश तथा कुरान की रोशनी में सही वाते लोगों को समझाएं, जैसा कि जनाव मौलाना अल हाफिज बशीर अहमद मासरी और मोहतरमा रजिया अहमद जैसी चंद शख्सीयतें इस काम को कर भी रही हैं, तभी लगातार बिगड़ते स्वास्थ्य (शारीरिक और मानसिक) व पयावरणीय असन्तुलन से बचा जा सकेगा। इस कुर्बानी के मौके पर हमें अपने सूफी फकीरों के नक्शे कदम पर चलने तथा प्यार, मोहब्बत, रहम, करूणा और ममत्व को जीवन का आदर्श बनाने का संकल्प लेना चाहिए ताकि दुनियां में प्रेम व दया का साम्राज्य बने।

क्या इस्लाम में पशुओं की कुर्बानी उचित है ? फैसला स्वयं करें !

चंचलमल चोरड़िया

आज के युग में वैज्ञानिक दृष्टिकोण के कारण मानव सभ्यता एवं बुद्धि का बहुत विकास हुआ है । मानव किसी तथ्य को तब तक स्वीकार नहीं करता जब तक वह तर्क, प्रमाण, अनुभूति, दृष्टान्त द्वारा उसकी प्रासंगिकता समझ न ले । समय के साथ किसी भी व्यवस्था, परम्परा या मान्यताओं में विकार आ सकते हैं । धर्म भी उससे कैसे अछूता रह सकता है ? परन्तु सजग, विवेकवान्, सम्यक् चिन्तनशील, प्रज्ञावान व्यक्ति ही उन विकारों को दूर करने के लिये तत्पर होते हैं । हिन्दु परम्परा में भी किसी समय यज्ञों में पशु बलि, पति की मृत्यु के पश्चात् पत्नी द्वारा सती होना आदि को धर्म माना जाता था । हरिजनों के लिये मंदिर में प्रवेश वर्जित था । परन्तु चन्द धर्म सुधारकों ने जनचेतना जागृत कर ऐसी परम्पराओं को बन्द कराया ।

धर्म प्रभावना में धर्म गुरूओं की भूमिका

धर्म हमेशा से लोगों की आस्था और श्रद्धा का केन्द्र रहा है । वह जीवन निर्माण एवं उत्थान हेतु मानव की प्रेरणा का स्रोत रहा है । परन्तु यह तब ही संभव है जब धर्म के सिद्धान्त विवेक विरोधी न हों । प्राणी मात्र में प्रेम, मैत्री, सद्भावना सहयोग, करूणा, दया के पोषक हों । धर्म की व्याख्या करने में हमारे धर्म गुरूओं की प्रमुख भूमिका होती है, क्योंकि वे ही धर्म के गूढ़ रहस्यों का अध्ययन कर एवं उन्हें समझ कर अपने अनुयायियों का पथ प्रदर्शन करते हैं । परन्तु कभी-कभी जब धर्म गुरू सिद्धान्तों का प्रतिपादन करते समय धर्म की मूल भावनाओं तथा प्राथमिकताओं को गौण कर देते हैं, तो धर्म के नाम पर अकरणीय कृत्य भी मान्यताओं और परम्पराओं का रूप ले लेते हैं । धर्मानुयायी श्रद्धावश उनका अन्धानुकरण करने लग जाते हैं । जब किसी आचरण को धर्म बता दिया जाता है तो धर्मानुरागियों के लिये आवश्यक रूप से करणीय हो जाता है । उनकी आस्थाएँ उन क्रियाओं के साथ जुड़ जाती हैं । यदि कोई सद्पुरूष ऐसी गलत परम्परा को दूर करने का प्रयास करते हैं तो मताग्रह, धर्मान्धता व

कट्टरता के कारण वैर, विरोध, वैमनस्य का वातावरण बनने की प्रबल संभावना रहती है । अत जनसाधारण को न चाहते हुए भी उन परम्पराओं का पालन करना पड़ता है ।

दया धर्म का मूल है

सभी धर्म प्रवर्तकों ने प्राणी मात्र के प्रति दया, करूणा, प्रेम, वात्सल्य, मैत्री, सहिष्णुता, भाईचारे आदि का उपदेश दिया । कोई भी धर्म निर्दयता, क्रूरता, विश्वासघात, धोखाधड़ी, स्वार्थ, अनैतिकता, अन्याय आदि को बढ़ावा देने की बात नहीं कहता । अन्य प्राणियों को कष्ट देने अथवा उनके अधिकारों के हनन की प्रेरणा नहीं देता । सभी धर्म अहिंसा के पालन को आवश्यक मानते हैं । दया को धर्म का मूल बतलाते हैं । संसार में ऐसा कोई धर्म नहीं है जिसमें कत्ल, क्रूरता और हिंसा को मान्य किया गया हो । सभी धर्मों में अहिंसा को सर्वोपरि स्थान दिया गया है एवम् उसका पूर्ण समर्थन किया गया है । संसार के सभी महापुरूष न्याय और समत्व, शांति और करूणा, अहिंसा और मानवता के पक्ष में रहे हैं, तब इस्लाम इसका कैसे अपवाद हो सकता है ? स्वामी विवेकानन्द ने स्पष्ट शब्दों में कहा है कि यह सोचना शैतान का काम है कि सारे पशु मनुष्य द्वारा मनमाने ढंग से मारने और खाने के लिए बने हैं । यह शैतान का शास्त्र है, परमेश्वर का आदेश नहीं हो सकता । यदि इस सनातन सत्य को ध्यान में रखकर इस्लाम में बिना पूर्वाग्रह पशुओं के प्रति मानव के कर्त्तव्यों के बारे में जो-जो बातें कही गई हैं उनके गूढ़ रहस्यों एवम् मर्म को जनसाधारण से अवगत कराया जाए तो धर्म के नाम पर पशुबलि के सम्बन्ध में उनके सोच में अवश्य बदलाव आएगा । बलिदान अथवा कुर्बानी की प्रथा का प्रारम्भ क्यों, कब और कैसे हुआ ? उसके पीछे मूल भावना तथा परिस्थितियाँ क्या थी ? क्या आज के युग में उसकी प्रासंगिकता है अथवा पूर्वसे प्रचलित परम्परा का निर्वाह मात्र है ? कुर्बानी किसकी की जानी चाहिए ? बुराइयों की या अच्छाइयों की, दुर्गुणों की अथवा सद्गुणों की । पाश्विक वृत्तियों की या मानवीय गुणों की ? क्या धर्म के नाम पर बेसहारा, बेजुबान, मूक पशुओं की कुर्बानी न्याय संगत है । जो प्राण हम दे नहीं सकते उनको लेने का हमें क्या अधिकार है ? खुदा इस दुनिया में किसी प्राणी की कुर्बानी का भूखा नहीं है । वह तो सबको शांत, सुखी, प्रसन्न, तनावमुक्त देखना चाहता है । वह तो अपनी खुशी के लिये किसी जानवर की बलि क्यों चाहेगा ? प्रत्येक बुद्धिमान, चिन्तनशील, न्यायप्रिय, विवेकवान, धार्मिक के लिये चिन्तन का विषय है ।

जानवरों के लिये इस्लामी दृष्टिकोण

इंग्लैण्ड की शाहजहां मस्जिद के भूतपूर्व इमाम "अल हाफिज बशीर अहमद मांजरी" ने अपनी पुस्तक "जानवरो के बारे में इस्लामी नजरिया" में कुराने पाक से १०० से अधिक एवं हदीस से लगभग ५० जुमलों के माध्यम से स्पष्ट किया है कि आदमी का जानवरों के साथ सलूक प्यार, रहम, मोहब्बत और बाइज्जत का होना चाहिए। अगर दूनिया के तमाम मजहब, मस्जिदे, गिरिजाघर, गुरूद्वारे, प्रार्थना और साधना स्थलों से धर्म गुरू अपने-अपने धर्मानुयायियों को सही राय, तालीमें और मार्गदर्शन करे कि जानवरों के साथ मनुष्य को कैसा बर्ताव करना चाहिए तो बहुत मुमकिन है सरकार और पूर्वाग्रही लोगों के सामने वास्तविकता प्रकट हो जावे।

इस्लाम में रहम को प्रधानता

कुराने मजीद के अनुसार जो व्यक्ति इन्सानियत और नेकी को भूल जाता है, वह आदमी के रूप में हैवान होता हैं। ऐसे लोगों के पास दिल तो होते हैं, एहसास नहीं। आँखें होते हुए भी वे देख नहीं पाते। कान होते हुए भी सुन नहीं सकते। खुदा ने मानव के लिये सबसे आवश्यक रहम, प्यार, इंसाफ बतलाया है। जिसका पालन अनिवार्य है। उन्होंने कहा शहद की मक्खी के समान बनो। वह जो खाती है पाक है। जो वह बनाती है मीठा शहद है और जिस फूल अथवा डाली पर बैठती है वह भी नहीं टूटती। इस्लाम में किसी भी नुकसान के बदले में बदला लेने और तबाही करने की सख्त मनाई है। पाक रसूल तो जंगली जानवरों की खाल तक के उपयोग का निषेध करते हैं।

इस्लाम में पशुओं पर अत्याचार अनुचित

कुरान मजीद में अल्लाह ताला फरमाते हैं "जानदार को जीने व दुनिया में रहने का बराबर व पूरा हक है। जो भी खुदा की पैदा की हुई चीजों, प्राणियों के साथ रहम करता है, वह अपने पर रहम करता है।" अत सभी प्राणियों पर दया करो। क्योंकि खुदा ने तुम पर बड़ी मेहरबानी की है। जानवरों को मारना और खेती को तबाह करना जमीन में खराबी फैलाता है और अल्लाह ऐसी खराबी को पसन्द नहीं करता। रसूलुल्लाह ने पशुओं को चीरने या पहिचानने के लिये किसी गरम वस्तु से उन पर निशान लगाने का सख्ती से मना किया। एकबार एक गधे को देखा जिसके चेहरे पर निशानी के लिये अग्नि का चिह्न दागा हुआ था, तो रसूलुल्लाह बहुत

क्रोधित हुए और कहा "जिसने भी यह कार्य किया है वह खुदा के आशीर्वाद से वंचित रहेगा"।

जब पाक नबी ६२२ ईस्वी में मक्का मदीना गये तब उन्होंने देखा वहाँ पर लोग ऊँट का कुब्क और भेड़ों की पूछे काट देते थे। पाक रसूल ने इस जंगली हरकत को न सिर्फ बन्द करवाया अपितु ऐसे कृत्य को हराम का करार दिया।

इस्लाम में पशुओं के अधिकारों की रक्षा

इस्लामी उसूल बतलाते हैं कि जानवरों के जो हक हैं, जो कुदरत ने उनके लिये दिया है, उनसे जानवरों को महरूम रखना बहुत बड़ा और संगीत अपराध है। खुदा की नजर में उसे सख्त से सख्त सजा दी जानी चाहिए। जानवरों से आदमी काम तो ले सकता है, लेकिन प्यार और रहम के साथ। क्योंकि जानवर अपने बचाव के लिये कुछ भी बोल नहीं सकते।

कुरान में मांसाहार निषेध

कुरआने हकीम की सूरत अलहज ३२:२२ में स्पष्ट किया गया है कि **ना तो पशुओं का मांस और ना ही उनका रक्त खुदा तक पहुँचता है। खुदा तक पहुँचता है तो सिर्फ मनुष्य का त्याग और रहम।** मुस्लिमों के लिये खून का उपयोग पूरी तरह मना है। इसी कारण इस्लामिक मेडिकल एसोशियेशन के प्रतिनिधि डॉ. ए. एम. कालमे ने मांसाहार को कुरान के कानून का स्पष्ट उल्लंघन बतलाया है। अत जो खून से बचना चाहे वह मांसाहारी कैसे हो सकता है? सम्राट अकबर ने भी दीन-ए-इलाही (१५९१ ई.) में स्पष्ट कहा है, 'सभी प्रकार की पशु हिंसा पाप है।'

इस्लाम मे पशुओं के प्रति हमदर्दी

रसूलूल्लाह ने एक स्थान पर बतलाया कि एक वेश्या ने भीषण गर्मी के दिनों में एक कुत्ते को देखा जो प्यास के कारण अपनी जीभ बाहर निकाले हुए कुएँ के आसपास चक्कर लगा रहा था। उस औरत ने अपना मौजा कुएँ में डालकर भिगोया और उसे निचोड़ कर कुत्ते को पानी पिला दिया। इस पुण्य से ईश्वर ने उसके सारे पाप क्षमा कर दिए।

पाँच वक्त की नमाज मुसलमानों के लिए पाँच फर्जों में से एक है। रसूलुल्लाह के साथी बतलाते थे कि रसूले पाक अपनी नमाज में देर कर देते थे, किन्तु पहले अपने जानवरों को खाना खिलाकर उनकी प्रत्येक जरूरियात को पूरा कर देते थे। ऐसे अनगिनत दृष्टान्त इस्लाम में पशुओं के प्रति करूणा, दया, प्रेम, अनुकम्पा से भरे पड़े हैं। फिर भी उनके अनुयायी

अज्ञानतावश धर्म के नाम पर पशुओं की बलि दें, कितना तर्क संगत, न्यायोचित एवं विवेक पूर्ण है ? अत उसपर पूर्वाग्रह छोड़कर व्यापक एवं अनेकान्त दृष्टिकोण से सम्यक् चिन्तन आवश्यक है। दुःख देने से दुःख मिलता है। कोई भी जीव अपनी इच्छा से बेमौत मरना नहीं चाहता। जिसको खिला पिलाकर पाला, पोषा, उसकी हिंसा तो विश्वासघात है। अपने बुद्धि, बल का दुरूपयोग है। इसके पीछे व्यक्ति की स्वादलोलुपता की भावना प्रमुख लगती है।

पशु बलि पर सम्यक् चिन्तन आवश्यक

बहुत से अहिंसा प्रेमी पशुओं की कुर्बानी नहीं देते। परन्तु वे इस प्रवृत्ति को अच्छा नहीं मानते हुए भी सच्चाई को जनसाधारण के सामने प्रकट करने का साहस नहीं जुटा पाते। हमारे बहुत से मुसलमान भाइयों को न चाहते हुए भी लोक-लाज एवं प्रचलित मान्यताओं के निर्वाह हेतु पशु बलि देनी पड़ती है। अपने संस्कारों, मान्यताओं और परम्पराओं की भावना उद्देश्य एवं रहस्य को समझे बिना उसको बदलता अथवा छोड़ना इतना सरल नहीं है। सर्वप्रथम सत्य को जानने की हमारी दृढ़ जिज्ञासा (Intention) होनी चाहिये। तत्पश्चात् दृढ़ निश्चय (Firm Determination) कर उसकी क्रियान्विति (Implementation) हेतु प्रयास कर अपनी मानसिकता तैयार करनी होगी। तब ही हम सही आचरण का पालन कर सकेंगे। **मुस्लिम धर्म गुरूओं का विशेष दायित्व हो जाता है कि वे अपने अनुयायियों को वास्तविकता का बोध करावें। करणीय-अकरणीय, भक्ष्य-अभक्ष्य, उचित-अनुचित, करूणा-क्रूरता, दया-निर्दयता, मैत्री-घृणा, प्रेम-वैमनस्य, अहिंसा-हिंसा में किसको चुनें ? किसको प्राथमिकता दें ? व्यापक दृष्टिकोण से सम्यक् चिन्तन करें। क्या न्यायोचित, तर्क संगत, प्रासंगिक एवं प्रकृति के शाश्वत सिद्धान्तों के नजदीक है, अपनी विवेक बुद्धि एवं प्रज्ञा द्वारा निर्णय करें। क्या इस प्रथा से करोड़ो अहिंसा प्रेमी इन्सानों के मन में पशुओं की बलि के कारण दुःख,पीड़ा, व्यथा, तनाव, बैचेनी परेशानी तो नहीं होती ? ईद जैसे प्रेम, भाईचारे तथा सद्भावना का संदेश देने वाले पुनीत पर्व पर ऐसे कृत्यों पर प्रत्येक मुसलमान भाई को भी चिन्तन करना चाहिए। धर्म के सिद्धान्त सदैव सनातन एवं शाश्वत होते हैं। परन्तु प्रचलित परम्पराएँ द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव के प्रभाव से परिवर्तित हो सकती है। पशुओं के कत्ल की मान्यता परम्परा लगती है, धर्म नहीं जिसका हमें विवेक रखना है। आप ही सोचें आप क्या करें ? खुदा के आदेशों का पालन करे अथवा मात्र प्रचलित परम्पराओं का निर्वाह। फैसला स्वयं करें।**

JAIN BHAWAN PUBLICATIONS

P-25 Kalakar Street, Calcutta - 700 007

English			
1.	*Bhagavati-sütra* – Test edited with English translation by K.C. Lalwani in 4 volumes;		
	Vol-I (śatakas 1-2)	Price : Rs.	150.00
	Vol-II (śatakas 3-6)		150.00
	Vol-III (śatakas 7-8)		150.00
	Vol-IV (śatakas 9-11)		150.00
2.	James Burges – *The Temples of Śatruñjaya*, Jain Bhawan, Calcutta, 1977, pp. x+82 with 45 plates	Price : Rs.	100.00
	[It is the glorification of the sacred mountain *Śatruñjaya.*]		
3.	P.C. Samsukha – *Essence of Jainism* translated by Ganesh Lalwani.	Price : Rs.	10.00
4.	Ganesh Lawani – *Thus Sayeth Our Lord*		10.00
Hindi			
5.	Ganesh Lalwani – Atimukta (2nd edn.) translated by Shrimati Rajkumari Begani		40.00
6.	Ganesh Lalwani – Śraman Samskriti ki Kavitä		20.00
7.	Ganesh Lalwani – Nílänjanä translated by Shrimati Rajkumari Begani		30.00
8.	Ganesh Lalwani – Candana-Mürti, translated by Shrimati Rajkumari Begani		50.00
9.	Ganesh Lalwani – Vardhamän Mahavír		60.00
10.	Ganesh Lalwani – Barsät kí Ek Rät		45.00
11.	Ganesh Lalwani – Pañcadaśí		100.00
12.	Rajkumari Begani – Yädó ke Äine më		30.00
Bengali			
13.	Ganesh Lalwani – Atimukta		40.00
14.	Ganesh Lalwani – Śraman Samskrti Kavitä		20.00
15.	Puran Chand Shyamsukha – Bhagaván Mahávír O Jaina Dharma		15.00

तित्थयर

जिन धर्म और संस्कृति की महक से
सुरभित करने वाली पत्रिका तित्थयर (मासिक)
के आजीवन सदस्य बनें ।

आजीवन सदस्यता शुल्क- एक हजार रूपये

JAIN JOURNAL

One of its Kind, most Valuable,
Quaterly research Journal
on Jainism

Life Membership – Rs. 2000/-
Yearly – Rs. 60/-

श्रमण

बंगाल की भूमि में जैन संस्कृति के
गौरव का प्रतीक श्रमण (बंगला) के
आजीवन सदस्य बनिये ।

आजीवन सदस्यता शुल्क- पाँच सौ रूपये
वार्षिक शुल्क- तीस रूपये

जैन मत तब से प्रचलित है
जबसे संसार में सृष्टि का आरम्भ हुआ ।
मुझे इसमें किसी प्रकार की आपत्ति नहीं है
कि जैन धर्म वैदान्तिक दर्शनों से पूर्व का है ।

Dr. Satish Chandra
Principal Sanskrit College
Calcutta

Estd. Quality Since 1940

BHANSALI

Quality. Innovation. Reliability

BHANSALI UDYOG Pvt. Ltd.

(Formerly : Laxman Singh Jariwala)

Balwant Jain- *Chairman*

A-42, Mayapuri, Phase-1, New Delhi - 110064
Phone : 5144496, 5131086, 5132203
Fax : 91-011-5131184
E-mail : laxman.jariwala@gems.vsni.net.in

जैन धर्म सर्वथा स्वतन्त्र धर्म है
यह किसी का अनुकरण नहीं है ।

Dr. Jacobi

卐

R. C. BOTHRA & COMPANY PVT. LTD

Steams Agents, Handling Agents,
Commission Agents & Transport Contractors

Regd. Office
2, Clive Ghat Street,, (N. C. Dutta Sarani)
6th Floor, Room No. 6, Phone : 220-6702, 220-6400
Fax : (91) (33) 220-9333, Telex : 21-7611 RAVI IN

Vizag Office
28-2-47 Daspalla Centre
Vishakhapatnam - 530020, Phone : 69208/63276
Fax : 91-0891-569326, Gram : BOTHRA

N. K. JEWELLERS
Gold Jewellery & Silver Ware Dealers
2, Kali Krishna Tagore Street, Calcutta - 700 007

IN THE MEMORY OF LATE
Jitendra Singh Nahar, Rabindra Singh Nahar
40/4A, Chakraberia South, Calcutta - 700 020
Phone : (O) 244-1309, (R) 475-7458

SUDERA ENTERPRISES PVT. LTD.
1, Shakespeare Sarani, Calcutta - 700 071
Phone : 282-7615/7617/2726
Gram : Sudera

VEEKEY ELECTRONICS
36, Dhandevi Khanna Road
Calcutta - 700 054
Phone : 352-8940/334-4140 (R) 352-8387/9885

SPACE 'N' WINGS
Travel Agents
10, Dr. Rajendra Prasad Sarani (Clive Row)
1st Floor, Calcutta - 700 001
Phone : 242-7806/8835/5852
P.S.A. Biman Bangladesh Airlines

GAUTAM TRADING CORPORATION
32, Ezra Street, Calcutta - 700 001
6th Floor, Room No - 654
Phone : (O) 250623, (R) 239-6823

SANA FASHIONS
A20/21 Laghu Udyog
I.B. Patel Road, Goregaon East, Bombay - 400 063

H. R. ELECTRICALS
Dealers in Electrical Switch gear, starter & spare parts
Siemens, English Electric L.T/ L.K. B.C.H., etc.
32, Ezra Street, 7th Floor, Room No - 712A
South Block, Calcutta - 700 001
Room No - 314, 3rd Floor
Phone : (O) 255009/1299, (R) 660-4332

VIJAY AJAY
9, India Exchange Place
Room No - 4/2, 4th Floor, Calcutta - 700 001
Phone : (O) 220-6974/8591/7126, 243-4318
Fax : 220 6974

MAHASINGH RAJ MEGH RAJ BAHADUR
Goal Para, Assam

KASTURCHAND VIJAYCHAND
155, Radha Bazar Street, Calcutta - 700 001
Phone : 220-7713

SURAJ MAL TATER
C/o Surajmal Chandmal
137, Bipin Behari Ganguli Street
Calcutta - 700 012
Phone : Shop - 227-1857 (R) 238-0026

TARUN TEXTILES (P) LTD.
203/1, Mahatma Gandhi Road, Calcutta - 700 007
Phone : 238-8677/1647, 239-6097

VISHESH AUTOMATIONS PVT. LTD.
Dealers of IBM, HCL-H.P. Seimens & Toshiba
16D, Ashutosh Mukherjee Road
Calcutta - 700 020, Phone : 476-2994, 455-0137
Fax : 91-33-4552151

ELECTRO PLASTIC PRODUCTS (P) LTD.
22, Rabindra Sarani, Calcutta - 700 073
Phone : 26-3028, 27-4039

MUSICAL FILMS (P) LTD.
9A, Explanade East, Calcutta - 700 069

S. VIJAY CHAND
Vinay Textiles
Whole Sale Merchants
113B Manohar Das Katra, Calcutta - 700 007
Phone : Shop - 238-1388, (R) 247-6105/2750
'Guddi' 10, Jamunalal Bajaj Street
2nd Floor, Calcutta - 700 007

जो हिंसात्मक प्रवृति से विलग है,
वही बुद्ध, ज्ञानी हैं
WITH BEST WISHES

PANKAJ NAHATA
Oswal Manufacturers Pvt. Ltd.
Manufacturers & Suppliers of Garments & Hosiery Labels
4, Jagmohan Mallick Lane, Calcutta - 700 007
Phone : (O) 238-4755, (R) 238-0817

KUMAR PAL BAHADUR SINGH DUGAR
2F, Garcha First Lane, Calcutta - 700 019
Phone : (O) 278841/7539, (R) 475-9712/2807

D. K. SYNTHETICS
Whole Sale Dealer
180, Mahatma Gandhi Road
Mullick Kothi, 1st Floor, Calcutta - 700 007
Phone : Shop - 232-6040, (R) 684181

JAYSHREE EXPORTS
A Govt. of India Recognised Export House
105/4 Karaya Road, Calcutta - 700 017
Phone : 247-1810/1751, 240-6447
Fax : 91-33247-2897

MAHAVIR COKE INDUSTRIES (P) LTD.
1/1A Biplabi Anukul Chandra Street
Calcutta - 700 072, Ph : 215-1297, 26-4230/4240

APRAJITA
Air Conditioned Market
Calcutta - 700 071, Ph : 282-4649, Resi : 247-2670

AAREN EXPORTERS
12A, Netaji Subhas Road, 1st Floor, Room No. 10
Calcutta - 700 001, Phone : 220-1370/3855

विशुद्ध केशर तथा मैसूर की सुगन्धित चन्दन की लकड़ी,
वरक एवं धूप के लिये पधारें
SHRI JAIN SWETAMBER SEVA SAMITI
13, Narayan Prasad Babu Lane
Calcutta - 700 007, Phone : 239-1408

S. P. SYNTHETICS
House of Exclusive Shirtings
38, Armenian Street, 1st Floor, Calcutta - 700 001
Phone : 25-7312, Shop : 230-1180, Resi : 241-6831

SIDDHA NIKETAN
Goldel Chance to book flat in Jaipur
8, Ho Chi Minh Sarani
Calcutta - 700 071, Ph : 282-2164/4577

M/S. METROPOLITION BOOK COMPANY
93, Park Street, Calcutta - 700 016
Ph: 226-2418, Resi : 464-2783

ARBEITS INDIA
8/1, Middleton Road, 8th Floor, Room No. 4
Calcutta - 700 071, Ph: 296256/8730/1029
Resi : 2476526/6638/2405126
Telex : 021 2333, ARBI IN, Fax : 226-0174

G. M. SINGHVI
M/S. WILLARD INDIA LIMITED
Mcleod House
13, Netaji Subhas Road, Calcutta - 700 001
Phone : (O) 248-7476-8, (R) 475-4851/1483
Fax : 248-8184

CREATIVE LIMITED
12, Dargah Road, Post Box : 16127, Cal - 17
Ph: (033) 240-3758/1690/3450/0514
Fax : (033) 240 0098, 247 1833

JAYANTI LAL & CO.
20, Armenian Street, Calcutta - 700 001
Ph: 25-7927/3816/6734, Resi : 240-0440

P. C. JAIN
B-14, Sarvodaya Nagar, Kanpur - 208005
Ph: 29-5552/29-5955

UJJWAL TRADING PVT. LTD.
Regd Office :11, Clive Row, 3rd Floor, Room no. 14,
Cal -700 001, Ph: (O) 242-4131/4756

HARAK CHAND NAHATA
21, Anand Lok, New Delhi - 110049
Ph : 646-1075

S.C. SUKHANI
Santiniketan Building, 4th Floor, Room No. 14
8, Camac Street, Calcutta - 700 017
Phone : (O) 242-0525 (R) 239-9548
Fax : 242-3818

MAUJIRAM PANNALAL
Citizen Umbrellas
45, Armenian Street, Calcutta - 700 007
Ph : Shop- 242-4483/9181, (O) 238-1396/1871
Fax : 231-2151/666-6013

A.C. LOCKS CO.
22 Bonfield Lane, Calcutta - 700 007

CHUNNILAL ASHOK KUMAR
30, Cotton Street, 3rd Floor
Calcutta - 700 007, Phone : 238-7764
Resi : 666-4541, 530-9286

ARIHANT JEWELLERS
Mahendra Singh Nahata
57, Burtalla Street, Calcutta - 700 007
Phone : 238-7015, 232-4087/4978

C. H. SPINNING & WEAVING MILLS PVT. LTD.
Bothra ka Chowk, Gangasahar, Bikaner

JAICHAND VINODKUMAR
Exclusive Wholesaler of Fancy Sarees
1/1, Noormal Lohia Lane, 2nd Floor, Calcutta - 700 007
Phone : 238-3328/9678, 239-3450
Resi : 247-6785/7086, 40-0325/3995
Fax : 239-3450, 247-7526
Telex : 217761 JVS-IN Gram MINNI-BROS

KUSUM CHANACHUR
Prop. Churoria Brothers
Mfg. by : K. C. C. Food Product
P.O. Ajimganj, Dist. : Murshidabad
Phone: STD (03483)-53234
Calcutta- 230-0432, 231-2802

SURANA MOTORS PVT. LTD.
24A, Shakespeare Sarani
84 Parijat, 8th Floor, Calcutta - 700 071
Phone: 2477450/5264

KALURAM RAMLAL
40A, Armenian Street, Calcutta - 700 001
Phone : 238-9089/239-1264

MOTILAL BENGANI
CHARITABLE TRUST
12 India Exchange Place
Calcutta - 700 001, Phone : 220-9255

A.M. BHANDIA & CO.
23/24 Radha Bazar Street, Calcutta - 700 001
Phone : 242 1022/6456/555-4315 (R)

BALURGHAT TRANSPORT LTD.
170/2/C, Acharya Jagadish Bose Road
Calcutta, Phone : 245-1612-15
2, Ram Lochan Mallick Street
Calcutta - 700 073

ABHAY SINGH SURANA
Surana House
3, Mango Lane, Calcutta - 700 001
Phone : 248-1398/7282

SATISH KUMAR SHYAMSUKHA
11, Pollock Street, Calcutta - 700 001

NARENDRA JAIN
Super Iron Factory
7, Rabindra Sarani, Calcutta - 700 001
Phone : 225-3785/0069
Works : 665-3144
Fax : 91-33-2250198, 943333, 954321

ACARDIA SHIPPING LTD.
22, Tulsiani Chambers
Nariman Point, Bombay - 400 021

SUDIP KUMAR SINGH DUDHORIA
Indian Silk House Agencies
129, Rasbehari Avenue
Calcutta, Phone : 464-1186

CALTRONIX
12, India Exchange Place
3rd Floor, Calcutta - 700 001
Phone : 220-1958/4110

BOTHRA & BOTHRA
12, Noormal Lohia Lane
2nd Floor, Calcutta - 700 007
Phone : Shop - 230-0216, (R) : 259657, 259312

GRAPHIC PRINT & PACK
12C, Lord Sinha Road, Calcutta - 700 071
Phone : (O) 242-4916/8380
Resi : 343-8302, Pager : 6902-315070

Dr. ANJULA BINAYIKA
M.D. DND, M.R.C.O.G (London)
12, Prannath Pandit Street
Calcutta - 700 025, Phone : 474-8008

ABHANI BACHHRAJ
Fancy Saree Emporium
156, J.L. Bajaj Street, 1st Floor, Calcutta - 700 007
Ph : Shop- 238-6582, 239-0079
Resi- 483988/2573

CHOPRA TYRES
Unit of Fatehchand Chopra & Family
Tyre Resoler
Sakunta Road, Agartala, (Tripura)

ASHOK TRADING COMPANY
Authorised Distributors of
J.K. Engineering Steel Files & Drills I.T. Cuttings, Tools
Miranda Tools & (Hacksaw Blades) BIPICO-ECLIPSE
18C, Sukeas Lane, Calcutta - 700 001
Ph : 242-2345/4461

BHANWARLAL KARNAWAT
BEEKY TAI FEB UDYOG PVT. LTD.
City Centre, Room No. 534 & 535, 5th Floor
16, Synagauge Street, Calcutta - 700 001
Ph : 238-7281, 230-1739

AKHILESH KUMAR JAIN
JUTE BROKER
9, India Exchange Place, Calcutta - 700 001
Phone : 221-4039, 210-2760, (R) : 660-1604

COMPUTER EXCHANGE
'Park Centre' 24 Park Street
Calcutta - 700 016, Phone : 295047, 299110

PARSAN BROTHERS
Diplomatic & Bonded Stores Suppliers
18-B, Sukeas Lane, Calcutta - 700 001
Ph : (O) 242-3870/4521, Fax : 242-8621

J. KUTHARI PVT. LTD.
12, India Exchange Place
Calcutta - 700 001
Ph: 220-3142, Resi : 475-0995, 476-1803
Fax : 221-4131

SATKAR CONSTRUCTION PVT. LTD.
Gujrat Mansion, 5th Floor
14, Bentick Street, Calcutta - 700 001
Ph : 248-4730/6256/9867, Direct : 248-6477/6169
Resi : 478-0765/458-3397, Mobile : 98300-30618
Fax : 248-6169

AJAY DAGA, AJAY TRADERS
203/1 M.G. Road, Calcutta - 700 007
Phone : (O) 238-9356/0950
(Fact) 557-1697/7059

DUGAR & CO. JUTE BROKER
12, India Exchange Place, (3rd Floor)
Calcutta - 700 001
Phone : 220-1283/0813, Resi : 555-6039

KUMAR CHANDRA SINGH DUDHORIA
7, Camac Street, Calcutta - 700 017
Phone : 242-5234/0329

BALCHAND SOHANLAL
5, Karbala Mohammed Street
Calcutta - 700 001, Phone : 953902/252759
Fax : 033-252902

BHEEKAM CHAND DEEP CHAND BHURA
D. C. Group Pvt. Ltd.
Sagar Estate, 5th Floor
2, Clive Ghat Street, Calcutta - 700 001
Phone : 220-4779/0131/5721

SUNDERLAL DUGAR
R.D.B. Industries Ltd.
Regd. Off : Bikaner Building
8/1 Lal Bazaar Street, Calcutta - 700 001
Ph : 248-5146/6941/3350, Mobile : 9830032021
Office : Tobacco House
1/2, Old Court House Corner
Calcutta - 700 001, Ph : 220-2389/3570/3569

SMT. KUSUM KUMARI DOOGAR
166, Jodhpur Park, Calcutta -700068
Phone: 4720610

GLOBE TRAVELS
Contact for better & Friendlier Service
11, Ho Chi Minh Sarani, Calcutta - 700 071
Phone : 282-8181

SURENDRA SINGH BOYED
Sovna Apartment
15/1 Chakrabaria Lane, Calcutta - 700 026
Phone : 476-1533

APARAJITA BOYD
9/10, Sitanath Bose Lane, Salkia
Howrah - 711 106, Phone : 665-3666/2272

BOYD SMITHS PVT. LTD.
8, Netaji Subhas Road
B-3/5 Gillander House, Calcutta - 700 001
Ph: (O) 220-8105/2139, Resi : 244-0629/0319

B. W. M. INTERNATIONAL
Manufacturers & Exporters
Peerkhanpur Road, Bhadohi - 221401 (U.P.)
Ph : (O) 05414-25178, 25778, 25779
Bikaner Ph : 0151-522404, 25973
Fax: 05414-25378 (U.P.) 0151- 61256 (Bikaner)

RATAN LAL DUNGARIA
16B, Ashutosh Mukherjee Road
Calcutta - 700 020, Ph: (R) 455-3586

ROYAL TOUCH OVERSEAS CORPORATION
47, Pandit Purushottam Roy Street, 2nd Floor,
Calcutta -700 007, Ph : (033) 230-1329, 232-1033
Fax: 91-33-2302413

NAHAR
5/1, A.J.C. Bose Road, Calcutta - 700 020
Ph: 247-6874, Resi : 244-3810

GRAPHITE INDIA LIMITED
Pioneers in Carbon/Graphite Industry
31, Chowranghee Road, Calcutta -700016
Ph: 2264943, 292194, Fax: (033) 2457390

LALCHAND DHARAMCHAND
Govt. Recognised Export House
12, India Exchange Place, Calcutta - 700 001
Ph: (B) 220-2074/8958 (D) 220-0983/3187
Cable : SWADHARMI, Fax : (033) 2209755
Resi : 464-3235/1541, Fax : (033) 4640547

PRITAM ELECT. & ELECTRONICS PVT. LTD.
22, Rabindra Sarani, Shop No. G-136
Calcutta - 700 073, Ph: (033) 262210

मथुरा के जैन स्तूप इस बात के
स्पष्ट और अकाट्य प्रमाण हैं कि
जैन धर्म प्राचीन है और
प्रारम्भ में भी वर्तमान स्वरूप में था ।

Shri Vinsent Smith

卐

RADHIKAS

ICE CREAM PARLOUR & FAST FOOD CENTRE

SHIVAM CHAMBERS
53, Syed Amir Ali Avenue
(Near Ice Scating Rink)
Calcutta - 700 019
Phone : 247-2602

THE PURE VEGETARIAN PARLOUR FOR CHOICEST & TASTIEST IDLIS, DOSAS, BURGERS, CHATS AND MANY MORE DELICIOUS FOODS WITH VARITIES OF ICE-CREAMS.

जैन संस्कृति मनुष्य संस्कृति है,
जैन दर्शन भी मनुष्य दर्शन ही है,
जिन देवता नहीं थे, किन्तु मनुष्य थे ।

Prof. Harisatya Bhattacharya

We are, always ready to most the Exact type of your requirement

AUCKLAND INTERNATIONAL LTD.

(UNIT : AUCKLAND JUTE MILLS)

'KANKARIA ESTATE'

6, Little Russel Street
Calcutta - 700 001

A Recognised Export House
Cable : SWANAUCK, CALCUTTA
Telex : 21-2396 AUCK IN
Codes : BENTLEY'S SECOND
Phone : 29-2621, 2623, 7199, 7698, 7710

Registered Office &
'JUTE MILL'
At Jagatdal, 24 Parganas
Phone : BHATPARA 2757, 2758 & 2038

एतिहासिक सामग्री से यह सिद्ध होता है कि आप से
पांच हजार वर्ष पहले भी जैन धर्म की सत्ता थी ।

Dr. Prannath (Historian)

GYANI RAM HARAKH CHAND SARAOGI CHARITABLE TRUST

P-8, Kalakar Street
Calcutta - 700 007
Phone : 239-6205/9727

Founders of

Shri Gyaniram Harakchand Saraogi College
of Arts & Commerse
Sujangarh

Shri Gyaniram Saraogi Homeo Hall

Shri Gyaniram Saraogi Physiotherapy Centre

भागवत पुराण के अनुसार
ऋषभदेव जैन धर्म के संस्थापक हैं ।

Shri Radha Krishnan

HINDUSTAN GAS & INDUSTRIES LTD.
ESSEL MINING & INDUSTRIES LTD.

Registered Office
"Industry House"
10, Camac Street, Calcutta - 700 017
Telegram : 'Hindogen' Calcutta
Phone : (033) 242-8399/8330/5443
Fax : (91) 33 2424998/4280

Manufacturers of
Engineers' Steel Files & Carbon Dioxide Gas
At Tangra (Calcutta)
IronOre and Manganese Ore Mines
In Orissa
S. G. Malleable & Heavy Duty Iron Castings
At Halol (Gujrat)
Ferro Vanadium and Ferro Molybdenum
At Vapi (Gujrat)
High Purity Nitrogen Gas
At Mangalore
H.D.P.E./P.P. Woven Sacks
At Jagdishpur (U.P.

सम्यग्दर्शन के बिना ज्ञान नहीं होता है। ज्ञान के बिना चरित्र के गुण नहीं होते। गुणों के बिना भक्ति नहीं होती और भक्ति बिना निर्वाण शाश्वत् आत्मानन्द प्राप्त नहीं होता।

G.C. Jain

A-40 N.D.S.E - II
New Delhi - 110049
Tel : 625-7095/0330

WB/NC - 330

VOL XXII No. 12

'Titth ayara'

Registered with the registered of Newspapers for India under No. R.N. 3018/77

March 1999

अरिहंते सरणं पवज्जामि
सिद्धे सरणं पवज्जामि
साहु सरणं पवज्जामि
केवलि पन्नत्तं धम्मं सरणं पवज्जामि

"आत्मा के साथ ही युद्ध करो, बाहरी दुश्मनों के साथ युद्ध करने से क्या लाभ? आत्मा को आत्मा के द्वारा ही जीत कर मनुष्य सच्चा सुख पा सकता है।"

Kamal Singh Rampuria
Rampuria Mansions
17/3 Mukhram Kanoria Road, Howrah
Phone No. : 666 7212/7225